कैसे बाबा जी ने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया

अहल्या नोरिस

वर्ष १९७९ की शरद ऋतु में, बाबा मुक्तानन्द की आत्मकथा, 'चित्शक्ति विलास' पढ़ने के कुछ समय पश्चात् मैं उनके दर्शन करने गई। बाबा जी अपनी तीसरी विश्वयात्रा पर थे और कुछ दिनों पहले ही श्री नित्यानन्द आश्रम आए थे [जो अब श्री मुक्तानन्द आश्रम के नाम से जाना जाता है]। सायंकालीन सत्संग के बाद जब मैं उत्सुकता के साथ दर्शन पंक्ति में आगे बढ़ रही थी तभी मेरे मन में एक ऐसा प्रश्न आया जिसके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सोचा था। जब मैं प्रणाम करने के लिए उनके सामने झुकी तब ऐसा महसूस हुआ जैसे इस प्रश्न के शब्द स्वतः ही मेरे अन्दर से व्यक्त हो रहे हों। मैंने पूछा, "बाबा जी, वह कौन है जो कहता है कि यह मेरा चेहरा है, यह मेरा हाथ है, यह मेरा शरीर है?"

बाबा जी ने उत्तर दिया, "तुम्हारे सवाल का जवाब मैं अगले ध्यान-शिविर में दूँगा।"

आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि इस ध्यान-शिविर में भाग लेने के लिए मुझमें कितनी उत्सुकता रही होगी जो बस कुछ ही दिनों बाद बाबा जी के साथ होने वाला था! यह मेरा पहला शक्तिपात ध्यान-शिविर था।

ध्यान-शिविर के दौरान मैं बाबा जी से उत्तर मिलने का इन्तज़ार करती रही। मैं पूरी लगन से ध्यान-शिविर के हर भाग में सम्मिलित हुई : एकाग्रचित्त होकर उनके प्रवचन सुने, संकीर्तन किया, ध्यान किया और जो कुछ मैं अनुभव कर रही थी उस पर मनन-चिन्तन किया।

फिर, जब मैं अन्तिम ध्यान-सत्र में ध्यान में बैठी थी, मेरे शरीर का ऊपरी भाग गोल-गोल घूमने लगा। बाद में मुझे पता चला कि मुझे कुण्डलिनी जागरण के फलस्वरूप शारीरिक क्रियाओं का अद्भुत अनुभव हो रहा था। कितना आनन्दमय था वह! इन शारीरिक क्रियाओं के साथ-साथ मुझे यह भी भान हो रहा था कि वहाँ कोई ऐसी सत्ता है जो मेरे शरीर की इन क्रियाओं को देख रही है। हालाँकि, मेरी आँखें ध्यान में बन्द थीं, फिर भी जो कुछ भी हो रहा था, उसे मैं चेतना की एक ऐसी अवस्था से देख रही थी जो निराकार थी तथा मेरे शरीर से पृथक और इससे परे थी। मैं हर चीज़ के प्रति पूरी तरह जागरूक थी पर मैं कुछ कर नहीं रही थी।

ध्यान-शिविर के बाद जब मैं घर जाने के लिए अपना सामान समेट रही थी, तब भी मुझमें वही द्रष्टाभाव और ज्ञाताभाव अर्थात् देखने वाले और जानने वाले का भाव बना रहा। बिना किसी प्रयत्न के,

मेरे हाथ सामान समेटने के लिए अपने आप ही चल रहे थे; बिल्डिंग से बाहर जाने के लिए सीढ़ियाँ उतरते समय मेरे पैर अपने आप ही चल रहे थे। पूरे समय मैं अपनी हर गतिविधि को इस सत्ता की उपस्थिति से, इस बोध से, मौन की इस निस्तब्ध अवस्था से देख रही थी।

जैसा कि बाबा जी ने कहा था, उन्होंने मेरे प्रश्न का उत्तर दे दिया। ध्यान-शिविर में उन्होंने बौद्धिक और वाणी के स्तर से कहीं ऊँचे स्तर पर मुझे उत्तर दिया। बाबा जी ने मुझे आत्मा की प्रत्यक्ष अनुभूति प्रदान की।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।